कमाल करता है कहानियों का संसार

बाल साहित्य के उपयोग से यह देखने को मिला कि बच्चों में पढ़ने के कौशल जैसे सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना आदि में गुणात्मक वृद्धि हुई, जिसमें उनके पढ़ने की गति बढ़ी और उनके लेखन में भी शब्द भंडार बढ़ने लगा। बच्चे एक-दूसरे की पढ़ने-पढ़ाने में सहायता भी करने लगे।

– नरेश चन्द्र

हम सब जानते हैं कि बच्चे नई–नई किताबे पढ़ने में रुचि रखते हैं। उनकी इसी रुचि के कारण से हम उनमें भाषा के कौशलों का विकास सरलता से कर सकते हैं और किताबें पढ़ने–पढ़ाने के दौरान उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है। निरन्तर अभ्यास के बाद बच्चे कल्पनाशीलता के आधार पर अपनी कहानी गढ़ने लगते हैं।

वर्तमान में, मेरे विद्यालय राजकीय प्राथमिक विद्यालय अंबेडकर नगर, रुद्रपुर एक छोटी सी बस्ती में स्थित है, जिसमें 2 शिक्षक और 33 बच्चे हैं। बाल साहित्य का उपयोग सीखने सिखाने में रूम–टू–रीड द्वारा किये जा रहे कार्य और विद्यालयों को उनके द्वारा प्रदान की गई किताबों के अच्छे प्रभाव मुझे अन्य शिक्षक साथियों से देखने और सुनने को मिल रहे थे, परंतु रूम–टू–रीड के मानदंडों के अनुसार हमारे विद्यालय को इसका लाभ नहीं मिल सका था। हमारे अथक प्रयास के बावजूद कुछ बच्चे सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में पिछड़ रहे थे। अपने स्कूल के सभी बच्चों को मैं स्वतंत्र पाठक के रूप के देखना चाहता था। उनमें किताबें पढ़ने–पढ़ाने को लेकर रुचि उत्पन्न हो सके, इसके लिए मैंने विभागीय मदद से बच्चों के लिए कुछ किताबें 2018–19 में खरीदीं और इस तरह हमारे स्कूल में बाल साहित्य की शुरुआत हुई। सभी किताबें बच्चों की पहुंच में रहें, इसके लिए बच्चों की मदद से किताबों को सुविधानुसार डोरी पर इस प्रकार टांग दिया गया कि बच्चे आसानी से लेकर पढ़ सकें।

इन पुस्तकों को देखकर बच्चे खुशी से झूम उठे। उनकी आखों में चमक आ गई। इन पुस्तकों से सम्बंधित हमने बातचीत की, जिसमें उनके रख–रखाव, रजिस्टर में अंकित करना, उनका आदान–प्रदान आदि पर बात हुई। कक्षा 4 की बालिका अनीषा ने इस कार्य के लिए अपना नाम दिया। इस कार्य के बाद बच्चों से कहा कि जो भी पुस्तकें आप लें, उसे रजिस्टर में जरूर दर्ज कर लें।

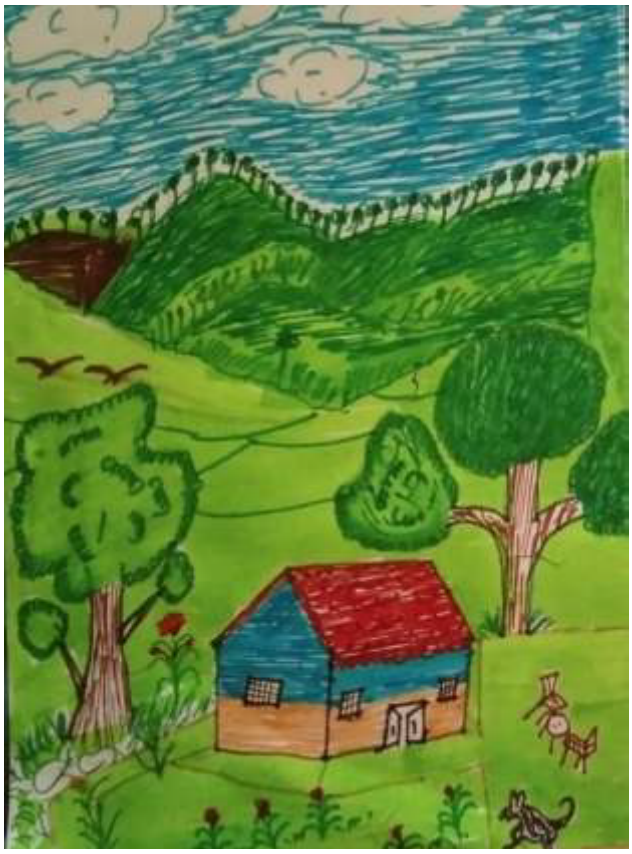

दिव्यांशु, कक्षा–3, ननूरखेड़ा, रायपुर, देहरादून

बच्चों के बीच इन पुस्तकों को पढ़ने की होड़ सी लग गई। बच्चों को विद्यालय में किसी भी समय इन पुस्तकों को पढ़ने की छूट थी। वे लंच समय व अन्य खाली समय में तथा कक्षा में दिया गया कार्य जल्दी से खत्म करके पुस्तकें पढ़ने लगे। कुछ बच्चे तो एक दिन में 2–3 पुस्तकें पढ़ने लगे और फिर आपस में किताबों पर चर्चा होने लगी कि किसने कौन–कौन सी कहानी पढ़ी। इस प्रक्रिया के प्रभाव के लिए तीन महीने 18 बच्चों के साथ बातचीत को साझा किया गया। जिसमें 1 से 5 के वे बच्चे थे। जिनमें भाषा के कौशलों को बढ़ाने की अधिक आवश्यकता थी।

बच्चों का पुस्तकों से यह लगाव उन्हें पढ़ने की ओर ले

गया। बच्चे अपनी क्षमतानुसार किताबें पढ़ते गए। इन पुस्तकों में उन्हें क्या अच्छा लगा? चित्र कैसे लगे? उनके पात्र कैसे लगे इस पर वे बातचीत साझा करने लगे। कक्षा में उनकी कहानियों, पढ़ी गई पुस्तक पर बातचीत बढ़ने लगी। एक–दूसरे को अपनी कहानी सुनाने लगे। प्रार्थना सभा में कहानियों को सुनाने के लिए कई नाम आने लगे। साथ ही अपनी कहानी सुनाने के लिए पहले से अपने नाम लिखवाने लगे।

अवलोकन 1

एक दिन मैंने 'लुढ़कता पहिया' किताब बच्चों के बीच पढ़ी और उस पर बातचीत की। जिससे अपनी कल्पना से जोड़कर अपने परिवेश की बच्चे जानकारी बड़े उत्साह से दे रहे थे। रंजीत बच्चा जो कम बोलता था, वह भी अपने पहिया चलाने के अनुभव बिना हिचक के सुना रहा था। पहले की अपेक्षा उसमें बोलने का आत्मविश्वास बढ़ता हुआ दिखा। इसके साथ अमन कक्षा 2 ने दोस्ती की कहानी पढ़ी हुई सुनाई। इसी तरह अन्य बच्चे भी अपनी–अपनी कहानी सुनाने को लालायित रहते। कहानी–कविता से सम्बंधित प्रश्नोत्तर से प्रार्थना सभा में उपस्थिति भी बढ़ने लगी ।

अवलोकन 2

दो माह के उपरांत मैंने बच्चों को अपनी पढ़ी कहानी–कविता को चित्रण के रूप में बताकर कुछ प्रश्न बनाने को दिए। अधिकांश बच्चों ने बोर्ड, कॉपी, दीवार लेखन के द्वारा सुंदर व आश्चर्यचकित प्रस्तुति दी। 18 बच्चों में से 11 बच्चों में ज्यादा बदलाव देखने को मिले। बाल साहित्य के प्रयोग से यह देखने में मिला कि अन्य के साथ चयनित बच्चों में पढ़ने के कौशल जैसे सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना आदि में गुणात्मक वृद्धि हुई, जिसमें उनके पढ़ने की गति बढ़ी और उनके लेखन में भी शब्द भंडार बढ़ने लगा। बच्चे एक–दूसरे की पढ़ने–पढ़ाने में सहायता भी करने लगे। कहानी से उनमें मूल्यों की भी समझ विकसित होती दिख रही थी। अब वे जब भी अपनी कहानी लिखते तो वाक्य विन्यास, मात्राओं की गलतियां कम होने लगीं। कुछ बच्चे कक्षा 1 व 2 के चित्र देखकर कुछ अनुमान लगाकर अपनी कहानी पढ़ने का प्रयास करने लगे। उनमें स्वतंत्र अभिव्यक्ति का विकास हुआ।

बाल साहित्य के प्रयोग से यह देखने में मिला कि अन्य के साथ चयनित बच्चों में पढ़ने के कौशल जैसे सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना आदि में गुणात्मक वृद्धि हुई, जिसमें उनके पढ़ने की गति बढ़ी और उनके लेखन में भी शब्द भंडार बढ़ने लगा।

इसलिए एक शिक्षक के रूप में इस कार्यानुभव से मुझे समझ आया कि कहानी, कविताओं की किताबों पर बातचीत के अवसर के द्वारा भाषा कौशलों का विकास, परिवेश आधारित स्वतंत्र अभिव्यक्ति, नैतिक मूल्य, रुचिपूर्ण वातावरण आदि अन्य गुणों का बच्चों में विकास होता है। इसलिए ऐसा प्रयास विद्यालय में जारी रखा जाना चाहिए।

कोरोना के समय में बाल साहित्य का उपयोग

सीखने–सिखाने की निरंतर चलने वाली प्रक्रिया में अचानक अकल्पनीय उथल–पुथल कोरोना काल के रूप में हो जाएगी, कभी सोचा भी न था। वैसे तो सीखना कभी बंद नहीं होता। हम क्या सीख रहे हैं यह परिस्थितियों, वातावरण, परिवेश आदि पर भी निर्भर होता है। इस लेख में जीवन के कुछ ऐसे कठिन समय में भी अवसर तलाशने के अनुभव पर बातचीत की गई है कि कोरोना काल में बाल साहित्य के उपयोग से कैसे पढ़ने–पढ़ाने की संस्कृति को जीवंत बनाया जा सकता है।

मार्च 2020

इस माह में अचानक कोरोना से स्कूल बंद हो गए वो भी तब जब सत्र का सतत मूल्यांकन अंतिम चरण में था। कुछ दिनों तो बच्चों को छुट्टी से लगा कि शायद संसार की सारी खुशियां मिल गई हों। परंतु जब सब घरों में कैद होने को मजबूर हो गए तो बच्चों की छटपटाहट बढ़ने लगी। खुद मुझको भी लग रहा था शायद कुछ छिन गया है। वो बच्चों की गूंजती आवाजें, उनकी मासूमियत भरी बातें, अब सुनने को नहीं मिल रही थीं। इसके उलट सड़कों पर लम्बी कतारें, घर आने के लिए तड़पते लोगों की खबरें टेलीविजन, अखबारों की विचलित करने वाली थीं।

अप्रैल 2020 से दिसंबर 2020

मार्च का महीना बीतने के बाद बच्चों, अभिभावकों से फोन पर उनके स्वास्थ, दिनचर्या आदि पर बातचीत की जाती थी। चावल वितरण के समय वर्कशीट दी गई, पियर ग्रुप

बनाए गए, व्हाट्सअप ग्रुप बनाया गया, टेलीविजन शिक्षण हेतु जागरूक किया गया। परंतु सीमित संख्या में बच्चों से संपर्क हो सका। अब एक बड़ी चुनौती थी कि सभी बच्चों को किस प्रकार सीखने के वातावरण से जोड़े रखा जाए।

जनवरी 2021

कोरोना काल में मुझे ऑनलाइन ग्रुपों की बातचीत से, लेखों को पढ़कर, वेबिनारों को सुनकर, व अन्य प्रशिक्षणों आदि से बहुत कुछ सीखने का नया मौका मिला। जिससे प्रेरित होकर मैंने सभी बच्चों में पढ़ने–लिखने की संस्कृति को जीवंत रखने के लिए बच्चों और अभिभावकों से संपर्क कर बाल साहित्य के उपयोग से बच्चों के लिए एक योजना तैयार की।

योजना

इस योजना को बनाने में मेरे सहयोगी और अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथियों का विशेष सहयोग रहा। बच्चों के साथ बातचीत में तय किया गया कि स्कूल के बाल साहित्य में कहानी, कविता की किताबों को घर पर पढ़ने के लिए इच्छुक किसी बच्चे, अभिभावक को उपलब्ध कराया जाएगा। बड़े बच्चे छोटे बच्चों की किताबें पढ़ने में मदद करेंगे। बच्चे किताबों को पढ़कर अपने परिवार जनों को सुना सकते हैं। जो कुछ किताबें पढ़कर समझ आए उसको लिख सकते हैं और सप्ताह में एक बार हर शनिवार को पढ़ी हुई किताबों पर बातचीत की जाएगी। बच्चे अपनी पुरानी किताबों को जमा करके नई किताबें ले जा सकते हैं। शुरू में कुछ बच्चे तैयार हुए और हर शनिवार को बच्चों से बातचीत शुरू हो गई।

प्रक्रिया

धीरे–धीरे बच्चों की रुचि और संख्या किताबें पढ़ने में बढ़ने लगी। जनवरी के अंत तक 16 बच्चे समुदाय की किताबें पढ़ने लगे। स्कूल के अधिकांश बच्चे किताबें ले जाने लगे और अपनी प्रतिक्रिया मौखिक, लिखित व्यक्त करने लगे। मेरे द्वारा हर सप्ताह एक कहानी सुनाकर बच्चों को सोचने के मौके दिए जाते थे।

गतिविधि

जब बच्चों से किताबों के कवर पर बातचीत की जाती थी तो सभी बच्चे अपनी–अपनी समझ से चित्रों, शब्दों के आधार पर अनुमान, कल्पना के द्वारा कहानी बनाते थे। फिर किताब की कहानी को पढ़ा जाता जिसको बच्चे बड़े ध्यान से सुनते थे और अपनी बनाई हुई कहानी से तुलना कर रहे होते थे।

कहानी पर बातचीत के समय कुछ शब्द पहचान भी कराई जाती जिसको बच्चे बड़े उत्साह से बताते थे।

कभी–कभी बच्चों को कहानी सुनाते समय रोककर पूछा जाता कि सोचो कहानी में आगे क्या हुआ होगा? इस गतिविधि में भी बच्चे बड़े चाव से हिस्सा लेते थे। बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर दिए जाते जिसमें बच्चे अपनी समझ से स्वतंत्र विचार एक–दूसरे के साथ साझा करने लगे। बच्चों के लिखित विचार एक–दूसरे को पढ़ने समझने के लिए दिए जाते। उनके लेखों का विश्लेषण करके बातचीत की रूपरेखा तैयार की जाती।

सीख

इस तरह लगभग तीन महीनों के अनुभव से विचित्र परिणाम नजर आने लगे। जैसे अन्य प्रयासों से बच्चों का अपेक्षित परिणाम 30 से 40 प्रतिशत था। परंतु बाल साहित्य की किताबों के प्रयोग से यह 80 प्रतिशत तक पहुंच गया। समुदाय के बच्चे प्रति सप्ताह किताबें पढ़ने की संख्या बढ़ने लगी। अभिभावक भी बच्चों की किताबें पढ़ने लगे। विद्योतमा बताती है कि मुझे भी किताबें पढ़ना अच्छा लगने लगा। रंजीत जो स्कूल आने से कतराता था अब वह हर बार आता है और कहानी पर अपने अनुभव सुनाता था।

अब स्कूल बंद होते हुए भी गांव में पढ़ने–पढ़ाने का वातावरण बना हुआ था। कोरोना के डर का माहौल कम होने लगा।

परंतु यह प्रयोग दूसरी लहर के कारण अप्रैल से जून तक फिर से बंद हो गया। जिसे जुलाई में दोबारा नियमित स्कूल खुलने तक जारी रखा गया। जिससे लर्निंग लॉस को कम करने में मदद मिली। बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ा व ब्रिज कोर्स की अवधारणा को बच्चे आसानी से पकड़ पा रहे थे।

बच्चों की रुचि को देखते हुए मैंने सितंबर माह में एक बरखा सीरीज का नया सेट और खरीदा है। अब स्कूल में बच्चों को 554 किताबें उपलब्ध है। मैं चाहता हूं कि बच्चे किताबें पढ़ने में इसी प्रकार की रुचि हमेशा बनाए रखें।

(लेखक राजकीय प्राथमिक विद्यालय, अम्बेडकरनगर, रुद्रपुर, उत्तराखण्ड में प्रभारी प्रधानाध्यापक के पद पर हैं।)